Volume: 5 Issue: 7 Pages: 89-91

रामकथा आधारित आधुनिक हिंदी कविताओं के नए आयाम

[*1] Dr. Vijeta Laxmi

[*1] Research Scholar, University of Delhi, Delhi, India.

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 18/June/2026
Accepted: 21/July/2026

***Corresponding Author**
Dr. Vijeta Laxmi
Research Scholar, University of Delhi, Delhi, India.

सारांश

रामकथा भारतीय काव्य-परंपरा की सर्वाधिक जीवंत एवं शाश्वत धारा रही है, जिसने प्रत्येक युग में नए रूपों और नए अर्थों को आत्मसात् किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र आधुनिक हिंदी कविता में रचित रामकथा-साहित्य के नए आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें यह देखने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार आधुनिक रचनाकारों ने परंपरागत रूप से गौण या उपेक्षित माने गए पात्रों-जैसे कैकेयी, शूर्पणखा, शम्बूक और उर्मिला-को केंद्र में लाकर कथा की पुनर्व्याख्या की है। साथ ही यह भी विश्लेषित किया गया है कि स्त्री-विमर्श, मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व, राम के चरित्र का मानवीकरण, राष्ट्रीय-सामाजिक चेतना तथा विधागत विविधता जैसे तत्त्वों ने रामकाव्य-परंपरा को किस प्रकार समृद्ध किया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि रामकथा की स्थायित्व-शक्ति उसकी कथावस्तु की स्थिरता में नहीं, बल्कि उसकी असीमित व्याख्या-क्षमता में निहित है, जिसके कारण यह कथा हर युग की वैचारिक आवश्यकताओं से संवाद करने में सक्षम रही है।

मुख्य शब्द: रामकथा, आधुनिक हिंदी कविता, रामकाव्य, स्त्री-विमर्श, हाशिए के पात्र, मानवीकरण, राष्ट्रीय चेतना, खंडकाव्य, महाकाव्य, पुनर्व्याख्या।

1. प्रस्तावना:

रामकथा भारतीय काव्य-परंपरा की सबसे समृद्ध एवं शाश्वत धारा रही है। वाल्मीकि से लेकर तुलसीदास तक जिस रामकथा ने भक्ति और आदर्श की भावभूमि पर अपना विस्तार पाया, आधुनिक काल में वही रामकथा नए प्रश्नों, नई चिंताओं और नई वैचारिकी के साथ पुनर्जीवित हुई है। आधुनिक हिंदी कविता ने रामकथा को केवल धार्मिक आख्यान के रूप में नहीं, बल्कि मानव-जीवन के जटिल यथार्थ, सामाजिक विषमता, नारी-चेतना और राष्ट्रीय आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में अपनाया है। यह प्रवृत्ति आधुनिक काव्य-चेतना की उस विशेषता को उजागर करती है, जिसमें प्राचीन कथाओं का उपयोग समकालीन सरोकारों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में उन नवीन आयामों की पड़ताल की गई है, जिन्होंने आधुनिक हिंदी रामकाव्य-परंपरा को परंपरागत रामकथा से अलग एक नई पहचान दी है।

2. रामकाव्य की ऐतिहासिक निरंतरता और आधुनिक मोड़

आधुनिक युग में रामकथा-साहित्य का सृजन अत्यंत विपुल मात्रा में हुआ है। ब्रज, अवधी, खड़ी बोली सहित अन्य भाषाओं में भी रामकथा-साहित्य प्रचुर मात्रा में रचा गया। यहाँ रचनाएँ मुख्यतः महाकाव्य, खंडकाव्य, गीतिनाट्य, स्वतंत्र कविताओं तथा गद्य विधाओं में रामकथा के स्वरूप को नए संदर्भों में प्रस्तुत करती हैं। रामचरित उपाध्याय की 'रामचरित चिंतामणि' (1920) से आरंभ हुई यह धारा मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत', अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध के 'वैदेही वनवास' से होते हुए स्वातंत्र्योत्तर युग की अनेक कृतियों तक विस्तृत होती चली गई। यह निरंतरता दिखाती है कि रामकथा हिंदी कविता के लिए कोई स्थिर या अपरिवर्तनीय ढाँचा नहीं रही, बल्कि प्रत्येक युग ने इसे अपनी वैचारिक आवश्यकताओं के अनुसार गढ़ा है।

3. आधुनिक रामकाव्य के नए आयाम

3.1 उपेक्षित एवं हाशिए के पात्रों का केंद्रीकरण

आधुनिक रामकाव्य की सबसे उल्लेखनीय प्रवृत्ति यह रही है कि उसने परंपरागत कथा में गौण या खलनायक मान लिए गए पात्रों को केंद्र में स्थापित किया। कैकेयी को लेकर रचित काव्य इसका सशक्त उदाहरण है। केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' कृत 'कैकेयी' में इस पात्र को राष्ट्रीय चिंतन से युक्त एक दूरदर्शी वीरांगना के रूप में चित्रित किया गया, जबकि चाँदमल अग्रवाल की 'कैकेयी' में उसी पात्र की व्याख्या नारी-मनोविज्ञान के धरातल पर की गई। इसी प्रकार जगदीश गुप्त की कृति 'शम्बूक' में रामकथा के एक उपेक्षित तथा हाशिए पर पड़े पात्र को स्वर देकर व्यवस्था के भीतर की विषमता को उघाड़ा गया है। शम्बूक के तर्क राम की मर्यादा-संपन्न छवि को प्रश्नांकित करते हैं और सामाजिक न्याय की माँग को काव्य के केंद्र में ला देते हैं।

गोपाल प्रसाद के खंडकाव्य 'शूर्पणखा' में भी परंपरागत रूप से दुरात्मा मानी गई पात्र को नायिका के रूप में प्रस्तुत कर उसके साहस और व्यक्तित्व को नई दृष्टि से देखा गया है। इस प्रकार हाशिए के पात्रों को केंद्रीयता प्रदान करना आधुनिक रामकाव्य का एक क्रांतिकारी आयाम सिद्ध होता है।

3.2 नारी-विमर्श और स्त्री-दृष्टिकोण की प्रधानता

आधुनिक रामकाव्य में स्त्री-चेतना की अभिव्यक्ति एक महत्वपूर्ण नया आयाम है। साकेत में मैथिलीशरण गुप्त ने उर्मिला के उज्ज्वल किंतु उपेक्षित चरित्र को प्रधान विषय बनाकर विरह की एक नई काव्यभाषा गढ़ी, जिसे आगे चलकर बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की 'उर्मिला' और नंदकुमार की 'उर्मिला निकेतन' जैसी रचनाओं ने और विस्तार दिया। नागार्जुन की दीर्घ कविता 'भूमिजा' में सीता एवं अहल्या के माध्यम से पुरुष द्वारा किए गए अन्याय और अविश्वास के विरुद्ध आक्रोश को मुखर किया गया है; इसमें स्त्री के सम्मान और समान अधिकार की माँग स्पष्टतः रेखांकित होती है। ममता कालिया के खंडकाव्य 'कितने प्रश्न करूँ' में अग्निपरीक्षा जैसी परंपरा पर सीधा प्रश्न उठाया गया है कि नैतिकता की कसौटी केवल स्त्री के लिए ही क्यों निर्धारित की गई। इसी क्रम में डॉ. उर्मिला किशोर की 'सीतायन' तथा राजदेव सिंह कौशल की 'सीतायन' सीता के द्वितीय वनवास की मनोदशा को केंद्र बनाकर स्त्री-वेदना और स्त्री-स्वातंत्र्य की पक्षधरता को स्वर देती हैं। इस प्रकार स्त्री-विमर्श आधुनिक रामकाव्य की एक सुदृढ़ वैचारिक भूमि के रूप में उभरता है।

3.3 मनोवैज्ञानिक गहराई और अंतर्द्वंद्व का चित्रण

परंपरागत रामकथा में पात्रों का व्यवहार प्रायः आदर्श और कर्तव्य के ढाँचे में बँधा रहता था, किंतु आधुनिक रामकाव्य ने पात्रों के भीतर के द्वंद्व, संशय और वेदना को गहराई से उकेरा है। नरेश मेहता की 'संशय की एक रात' में राम युद्ध के औचित्य को लेकर गहन मानसिक उहापोह से गुजरते हैं और मानव-रक्त पर आधारित विजय को अस्वीकार करने की बात कहते हैं। इसी प्रकार सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की 'राम की शक्तिपूजा' में राम की क्षणिक निराशा और आत्मसंशय का चित्रण करके उन्हें एक आधुनिक, संवेदनशील मानव-नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। नरेश मेहता की ही 'प्रवाद पर्व' में राम की आंतरिक व्यथा और उनके भीतर चलने वाला द्वंद्व सत्ता, न्याय और व्यक्तिगत संबंध के बीच के तनाव को उद्घाटित करता है। यह मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण रामकथा के पात्रों को दैवीय आवरण से मुक्त कर मानवीय संवेदना के स्तर पर ले आता है, जो आधुनिक काव्य-चेतना की एक विशिष्ट देन है।

3.4 राम के चरित्र का मानवीकरण

आधुनिक रामकाव्य की एक और महत्वपूर्ण विशेषता राम के चरित्र को मर्यादा पुरुषोत्तम के दैवीय स्वरूप से हटाकर एक संघर्षशील, संशयग्रस्त और भावनात्मक रूप से जूझते मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करना है। सेठ गोविंददास के नाटक 'कर्तव्य' में राम कर्तव्य-पालन के लिए निरंतर व्यक्तिगत सुख का त्याग करते दिखाई देते हैं, जिससे उनके चरित्र में करुणा और संघर्ष दोनों की झलक मिलती है। सर्वदानंद के नाटक 'भूमिजा' में तो राम की मर्यादा पर सीधा प्रश्न उठाकर उनके भीतर के मिथ्या अहं को उद्घाटित किया गया है। डॉ. चित्रा चतुर्वेदी की कृति 'वैदेही के राम' में यह मान्यता प्रस्तुत की गई है कि सीता के निर्वासन के साथ ही राम का भी अपनी निजता से निर्वासन हो जाता है और वे केवल राजा बनकर रह जाते हैं। यतींद्र मिश्र की 'अयोध्या' शृंखला की कविताओं में भी राम को एक चुप, संयत किंतु मर्यादा के भीतर टूटते हुए व्यक्तित्व के रूप में देखा गया है। यह मानवीकरण रामकथा को आधुनिक पाठक के निकट लाने का एक सशक्त माध्यम बनता है।

3.5 सामाजिक-राजनीतिक चेतना और राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति

आधुनिक रामकाव्य ने रामकथा को राष्ट्रीय जागरण, स्वाधीनता आंदोलन और लोकतांत्रिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनाया। मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' में रामकथा के माध्यम से सत्याग्रह, कुटीर उद्योग तथा प्रजातांत्रिक चेतना की झलक मिलती है। शिवमंगल सिंह 'सुमन' की कविता 'जल रहे हैं दीप-जलती है जवानी' में राम को कृषि-सभ्यता के प्रतीक तथा रावण को शोषक पूँजीवाद के प्रतीक के रूप में चित्रित कर संपूर्ण कथा को प्रगतिवादी अर्थ प्रदान किया गया है, जिसमें वानर-भालू जैसे शोषित वर्ग संगठित होकर अन्याय के विरुद्ध खड़े होते हैं। बलदेव प्रसाद मिश्र के 'रामराज्य' में गांधीवादी सामाजिक संरचना और मानवतावादी जीवन-दृष्टि की अभिव्यक्ति मिलती है। इस तरह रामकथा का उपयोग समकालीन राजनीतिक और सामाजिक विमर्शों के लिए एक रूपक के रूप में किया गया, जिससे यह कथा शाश्वत होते हुए भी हर युग की समस्याओं से संवाद करने में सक्षम सिद्ध हुई।

3.6 काव्य-रूपों तथा विधाओं की विविधता

आधुनिक युग में रामकथा ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए विविध काव्य-रूपों का सहारा लिया, जो इसका एक और नया आयाम है। महाकाव्य की परंपरागत गरिमा के साथ-साथ खंडकाव्य, गीतिकाव्य, मुक्तक कविता तथा गद्य-काव्य जैसी नई विधाएँ भी इस कथा को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनीं। जहाँ एक ओर बाबूलाल अग्निहोत्री का 'वनस्थली' अथवा डॉ. रामप्रसाद मिश्र का 'पुरुषोत्तम' परंपरागत महाकाव्यात्मक गरिमा को निभाते हैं, वहीं दूसरी ओर छोटे कलेवर के खंडकाव्य जैसे भारत भूषण अग्रवाल का 'अग्निलीक' अथवा सुमित्रानंदन पंत का 'अशोक वन' किसी एक भावदशा या प्रसंग को सघनता से उभारने में सक्षम हुए। इसी प्रकार गीतिनाट्य एवं एकांकी विधा में डॉ. रामकुमार वर्मा की 'राजरानी सीता' जैसी रचनाएँ रामकथा को नाट्यात्मक संक्षिप्तता में प्रस्तुत करती हैं। इस विधागत वैविध्य ने रामकथा को अभिव्यक्ति की नई संभावनाओं से समृद्ध किया।

3.7 प्रतीकात्मकता और दार्शनिक विस्तार

आधुनिक रामकाव्य में रामकथा के प्रसंगों को प्रतीकात्मक अर्थवत्ता प्रदान करने की प्रवृत्ति भी उल्लेखनीय है। सुमित्रानंदन पंत के 'अशोक वन' में लंका-दहन को रूढ़ियों के ध्वंस और सत्ता के भौतिक कीर्ति-स्तंभ के भस्मीकरण के प्रतीक रूप में व्याख्यायित किया गया है। रामावतार पोद्दार की 'अरुण रामायण' में सीता को शक्ति-चेतना के प्रतीक रूप में तथा राम-भरत को लोकतंत्र के चारित्रिक उन्नायकों के रूप में देखा गया है। इस प्रकार रामकथा के पात्र और घटनाएँ अपने शाब्दिक अर्थ से आगे बढ़कर व्यापक दार्शनिक और सामाजिक प्रतीकों में रूपांतरित हो जाती हैं, जो आधुनिक काव्य-चिंतन की विशिष्ट प्रवृत्ति है।

4. प्रतिनिधि रचनाओं का तुलनात्मक विश्लेषण

उपर्युक्त आयामों को यदि तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक युग और प्रत्येक रचनाकार ने रामकथा के किसी न किसी पक्ष को अपनी वैचारिक आवश्यकता के अनुरूप विशेष रूप से उभारा है। जहाँ मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत' छायावाद-पूर्व युग की करुणा और राष्ट्रीय जागरण की भावना को समेटे हुए है, वहीं नरेश मेहता का 'संशय की एक रात' नई कविता के दौर की अस्तित्ववादी उधेड़बुन और मनुष्य की नैतिक विवशता को उजागर करता है। इसी प्रकार निराला की 'राम की शक्तिपूजा' छायावादी काव्य-चेतना की विशिष्ट देन है, जिसमें राम की क्षणिक निराशा को पराधीन भारत के आत्मबल-जागरण के प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया गया है। दूसरी ओर स्वातंत्र्योत्तर काल की रचनाएँ, जैसे जगदीश गुप्त

का 'शम्बूक' अथवा भारत भूषण अग्रवाल का 'अग्निलीक', सामाजिक विषमता और सत्ता की संरचना पर सीधा प्रश्नचिह्न लगाती हैं। इक्कीसवीं सदी के निकट आते-आते ममता कालिया और डॉ. उर्मिला किशोर जैसी रचनाकारों की कृतियाँ स्त्री-विमर्श की भाषा में रामकथा को पुनर्परिभाषित करती हैं। यह तुलनात्मक क्रम यह सिद्ध करता है कि रामकथा की स्थिरता उसकी कथावस्तु में नहीं, बल्कि उसकी व्याख्या-क्षमता की असीमितता में निहित है। प्रत्येक रचनाकार ने कथा के मूल ढाँचे को यथावत् रखते हुए भी उसके भीतर से नए अर्थ खोज निकाले हैं, जो रामकथा की काव्यात्मक लचीलेपन का प्रमाण है।

भाषिक दृष्टि से भी यह विविधता उल्लेखनीय है। जहाँ हरदयाल सिंह ने ब्रजभाषा में 'रावण' महाकाव्य की रचना कर परंपरागत काव्य-शैली का निर्वाह किया, वहीं अधिकांश आधुनिक रचनाकारों ने खड़ी बोली को अपनाकर रामकथा को सामान्य पाठक के अधिक निकट ला दिया। डॉ. आद्या प्रसाद सिंह के 'सिंधु लंघन' जैसी अवधी में रचित कृतियाँ यह दर्शाती हैं कि क्षेत्रीय बोलियों में भी रामकथा की सृजनात्मक परंपरा जीवंत बनी रही। भाषा के इस बहुरूपी प्रयोग ने रामकथा को विभिन्न पाठक-वर्गों और भाषिक समुदायों तक पहुँचाने में सहायता की, जिससे यह कथा अखिल भारतीय स्तर पर अपनी सजीवता बनाए रख सकी।

5. समकालीन प्रासंगिकता

आधुनिक हिंदी रामकाव्य का अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि रामकथा आज भी समकालीन प्रश्नों से संवाद करने में सक्षम है। नारी-अधिकार, सामाजिक न्याय, वर्ग-विषमता, सत्ता की जवाबदेही तथा मानवीय गरिमा जैसे विषय, जो समकालीन विमर्श के केंद्र में हैं, रामकथा के माध्यम से भी उतनी ही सजीवता के साथ अभिव्यक्त हुए हैं। यतींद्र मिश्र की 'अयोध्या' शृंखला इस बात का प्रमाण है कि रामकथा आज भी सांप्रदायिक सद्भाव, सामाजिक समरसता तथा सांस्कृतिक अस्मिता जैसे ज्वलंत प्रश्नों से जुड़ सकती है। रामकथा की यह प्रासंगिकता इस तथ्य से भी सिद्ध होती है कि प्रत्येक पीढ़ी के रचनाकारों ने इसे नए सिरे से गढ़ने का साहस दिखाया, बजाय इसके कि वे इसे केवल परंपरा के रूप में स्वीकार कर लेते। इस अर्थ में रामकथा हिंदी कविता के लिए एक ऐसा अक्षय स्रोत सिद्ध होती है, जिससे प्रत्येक युग अपनी वैचारिक प्यास बुझाता रहा है और आगे भी बुझाता रहेगा।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि आधुनिक हिंदी रामकाव्य ने अपनी प्राचीन कथा-परंपरा को नकारे बिना उसमें अनेक नए आयाम जोड़े हैं। हाशिए के पात्रों को केंद्र में लाना, स्त्री-दृष्टिकोण को प्रधानता देना, पात्रों के भीतर मनोवैज्ञानिक द्वंद्व को उकेरना, राम के चरित्र का मानवीकरण करना, रामकथा को राष्ट्रीय-सामाजिक चेतना के रूपक के रूप में प्रयुक्त करना तथा विधागत विविधता को अपनाना—ये सभी प्रवृत्तियाँ मिलकर रामकथा को हर युग के लिए प्रासंगिक बनाए रखती हैं। यही कारण है कि रामकथा केवल भक्ति-काव्य की परिधि में सीमित न रहकर आधुनिक मानव की जिज्ञासाओं, प्रश्नों और संघर्षों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन सकी है। यह निरंतर पुनर्व्याख्या ही रामकथा की जीवंतता और उसकी सांस्कृतिक स्थायित्व का प्रमाण है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि आधुनिक हिंदी कविता ने रामकथा को समय की कसौटी पर पुनः परखते हुए उसे एक ऐसा सजीव पाठ बना दिया है, जो भविष्य के रचनाकारों के लिए भी सृजनात्मक संभावनाओं का अक्षय स्रोत बना रहेगा।

संदर्भ सूची:

1. उपाध्याय, रामचरित—रामचरित चिंतामणि (1920)।
2. गुप्त, मैथिलीशरण—साकेत।
3. मिश्र, बलदेव प्रसाद—कौशल किशोर (1934), रामराज्य।
4. उपाध्याय हरिऔध, अयोध्यासिंह—वैदेही वनवास (1938)।
5. मिश्र, केदारनाथ 'प्रभात'—कैकेयी।
6. सिंह, हरदयाल—रावण (1952)।
7. शर्मा 'नवीन', बालकृष्ण—उर्मिला (1954)।
8. पोद्दार, रामावतार—विदेह, अरुण रामायण (1973)।
9. अग्निहोत्री, बाबूलाल—वनस्थली (1955)।
10. मिश्र, बलदेव प्रसाद—रामराज्य।
11. द्विवेदी, गया प्रसाद—नंदी ग्राम।
12. लाल, मनबोधन—भगवान राम।
13. अग्रवाल, चाँदमल—कैकेयी (1969)।
14. अग्रवाल, राजेश्वरी—सीता-समाधि।
15. शबनम, डॉ. माया—अपराजिता-सीता।
16. मिश्र, डॉ. रामप्रसाद—पुरुषोत्तम (2003)।
17. साहनी, श्रीमती शांतिसहाय निलिनी—रामकथा महाकाव्य (2005)।
18. शर्मा, गोकुलचंद्र—अशोक वन (1951)।
19. नागार्जुन—भूमिजा (पाषाणी, राम-लक्ष्मण)।
20. अग्रवाल, भारत भूषण—अग्निलीक (1976)।
21. अनिल, गोविंद—अयोध्या की एक शाम (1976)।
22. मेहता, नरेश—प्रवाद पर्व (1977), संशय की एक रात।
23. रामरंग, सोहनलाल—उत्तर साकेत।
24. कुमार, नंद—उर्मिला निकेतन (1983)।
25. गुप्त, जगदीश—शम्बूक।
26. सारस्वत, डॉ. गणेशदत्त—विभीषण।
27. प्रसाद, गोपाल—शूर्पणखा।
28. प्रीतम, डॉ. सरोजिनी—सीता का महाप्रयाण।
29. मित्र, रघुवीर शरण—भूमिजा।
30. चतुर्वेदी, डॉ. चित्रा—वैदेही के राम (2004)।
31. कालिया, ममता—कितने प्रश्न करूँ (2008)।
32. सिंह, डॉ. आद्या प्रसाद—सिंधु लंघन (2012)।
33. किशोर, श्रीमती उर्मिला—सीतायन (2013)।
34. त्रिपाठी 'निराला', सूर्यकांत—राम की शक्तिपूजा।
35. पंत, सुमित्रानंदन—अशोक वन (1968)।
36. शुक्ल, राजा राम—जानकी जीवन।
37. सिंह 'सुमन', शिवमंगल—जल रहे हैं दीप-जलती है जवानी।
38. सिंह कौशल, राजदेव—सीतायन।
39. मिश्र, यतींद्र—अयोध्या तथा अन्य कविताएँ (2000)।
40. सिंह, विश्वनाथ—आनंद रघुनंदन।
41. शर्मा, श्री शीतला प्रसाद—जानकी मंगल (1876)।
42. मिश्रबंधु—रामचरित (1941)।
43. द्विवेदी, पं. सुधाकर—राम-भारद्वाज मिलन (1910)।
44. चौधरी 'प्रेमघन', बद्रीनाथ—प्रयाग रामागमन (1911)।
45. गोविंददास, सेठ—कर्तव्य (1935)।
46. अवस्थी, सद्गुरु शरण—मँझली रानी (1940)।
47. सर्वदानंद—भूमिजा (1951)।
48. वर्मा, डॉ. रामकुमार—राजरानी सीता।
49. शास्त्री, आचार्य चतुरसेन—मेघनाथ वध।